26 जनवरी 2021, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 39, अंक 7, कुल पृष्ठ 36

ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा, जिला–बडवानी (म.प्र.)

वीतराग–विज्ञान (450)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर – 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10000

आत्मा का लक्षण

अज्ञानी को 'जो देह है वही मैं हूँ, अथवा जो राग है वही मैं हूँ' – ऐसी भ्रमणा है, इसलिये उसे तो आत्मा के लक्षण का ही भान नहीं है। राग की वृत्ति तो बाह्य में जाती है और उसमें आकुलता होती है, उसमें आत्मा का अनुभव नहीं होता और ज्ञान अन्तरोन्मुख होने से आत्मा का अनुभव होता है तथा राग छूट जाता है; इसप्रकार राग और ज्ञान भिन्न–भिन्न हैं, उनमें ज्ञान ही आत्मा का लक्षण है।

ऐसा जाने तब आत्मा के लक्षण को जाना कहलाता है और ऐसे लक्षण को जाने तभी आत्मा का अनुभव होता है।

अज्ञानी जन आत्मा को अनेक प्रकार से विपरीत लक्षण वाला मान रहे हैं, इसलिये उन्हें तो लक्षण ही अप्रसिद्ध है तब फिर लक्ष्य की प्रसिद्धि कहाँ से हो?

लक्षण तो उसे कहा जाता है कि जो त्रिकाल लक्ष्य के साथ रहे और लक्ष्य की पहिचान कराये। शरीर या पुण्य आत्मा का लक्षण नहीं है, आत्मा का लक्षण तो ज्ञान है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 5

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार।।

वर्ष : 39 (वीर नि. संवत् – 2547) 450 अंक : 7

धर्म बिन कोई...

धर्म बिन कोई नहीं अपना,
सब सम्पत्ति धन थिर नहिं जग में, जिसा रैन सपना।।टेक।।
आगै किया सो पाया भाई, याही हे निरना।
अब जो करैगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना।।
धर्म बिन कोई...।। 1।।
ऐसै सब संसार कहत है, धर्म कियै तिरना।
परपीड़ा बिसनादिक सेवैं, नरकविषैं परना।।
धर्म बिन कोई...।। 2।।
नृप के घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना।
अरु दारिद्री कैं हू ज्वर है, पाप उदय थपना।।
धर्म बिन कोई...।। 3।।
नाती तो स्वारथ के साथी, तोहि विपत भरना।
वन गिरि सरिता अगनि जुद्ध मैं, धर्महि का सरना।।
धर्म बिन कोई...।। 4।।
चित 'बुधजन' सन्तोष धारना, पर–चिन्ता हरना।
विपत्ति पड़ै तो समता रखना, परमातम जपना।।
धर्म बिन कोई...।। 5।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

जिनदेशना शिविर सानन्द संपन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में जिनदेशना युवा आध्यात्मिक शिविर दिनांक 20 से 24 दिसम्बर 2020 तक आयोजित किया गया।

उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री हितेन अनंतराय शेठ मुम्बई, मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि श्री विनी विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री चिराग सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री रजतजी जैन बैंगलोर, श्री राहुल नवीनजी मेहता मुम्बई थे। शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री स्वप्निल पवनजी जैन मंगलायतन, आमंत्रणकर्ता श्री तीर्थेश संजयजी दीवान सूरत, सह आमंत्रणकर्ता श्री सम्यक् वीरेशजी जैन सूरत थे। ध्वजारोहणकर्ता श्री वैभव अजितप्रसादजी जैन दिल्ली एवं उद्घाटनकर्ता श्री नयनजी शास्त्री हैदराबाद थे।

प्रातःकाल श्री 170 तीर्थंकर मंडल विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, श्री नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, श्री अजितजी अचल ग्वालियर, मंगलार्थी अनुभवजी जैन करेली, डॉ. अभिषेकजी शास्त्री अहमदाबाद आदि विद्वानों द्वारा प्रवचन व रात्रि में शंका-समाधान के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर में विभिन्न विषयों पर अनेक विद्वानों द्वारा परिचर्चा एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व सामायिक का आयोजन हुआ। शिविर में पहली बार आठ युवा विद्वानों पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, डॉ. भागचंदजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, डॉ. अभिषेकजी शास्त्री अहमदाबाद, श्री अमितजी शास्त्री अरिहंत मडावरा का सम्मान किया गया। समापन समारोह में शिविर शिरोमणि श्री राहुल महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर, अध्यक्ष श्री हार्दिक आई.एस. जैन मुम्बई, मुख्य अतिथि डॉ. रवीशजी जैन सनावद, विशिष्ट अतिथि श्री मयूरजी जैन अमेरिका, श्री तिलक प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री रवि ब्रजलालजी जैन मुम्बई, श्री अंकित ललितजी शास्त्री लूणदा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित संजयजी जेवर द्वारा श्री राजेशजी काला व श्री अशोकजी उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

सातवाँ अध्याय

(गतांक से आगे ...)

अरे मैं ऋषभदेव के पास निराकुल होकर कुछ दिन रहूँ।
और गहराई से हे भाइ! दिव्यध्वनि का आलोड़न करूँ।।
अरे भरपूर चिन्तवन करूँ निरन्तर मन्थन करता रहूँ।
स्वयं का ज्ञान-ध्यान-श्रद्धान निरन्तर ही मैं करता रहूँ।। ४०।।

आपने मुझको अवसर दिया बन्धु उपकार मानता हूँ।
आपने इस झंझट से किया मुक्त आभार मानता हूँ।।
अरे मैं उलझ गया था बन्धु आपने मुझे उबारा है।
सम्भालो यह पूरा साम्राज्य आपका ही यह सारा है।। ४१।।

अरे मैंने मानी है हार चक्र अब मेरा कैसे रहा?।
और जीता है मेरा भाई चक्र तो घर का घर में रहा।।
मुझे खुशियाँ हैं अपरम्पार अरे जीता है मेरा भाई।
मुझे है परमानन्द अपार मिलेगा दिव्यध्वनि का लाभ।। ४२।।

अरे यह हो सकता है नहीं आपने जीते हैं छह खण्ड।
सभी राजाओं ने महाराज आपको ही स्वीकारा है।।
सभी ने बहिन-बेटियाँ भी आपको ही अर्पित की हैं।
और यह चक्ररत्न का पुण्य आपके ही पल्ले में है।।४३।।

अरे वे बहिन-बेटियाँ सभी आपकी पत्नी हैं जो आज।
पूज्य जननी सम हैं वे सभी भाभियाँ हम लोगों की आज।।
आपके आश्वासन पर आज सभी संगठित हुये जो लोग।
सभी का कैसा होगा हाल और क्या सोचेंगे वे लोग।।४४।।

सभी बिखरे-बिखरे थे राज्य आपने किया सभी को एक।
अरे सबके विकास की बात आपने समझाई सबको।।
अरे मिलकर चलने की बात आपने ही समझाई है।
और मिलकर चलने की राह आपने ही दिखलाई है।। ४५।।

अरे अब भाई अधर में छोड़ आप कैसे जा सकते हैं?
और ये मुकुटबद्ध राजा आपको कैसे छोड़ेंगे?।।
आपको ही संभालना है अरे यह छह खण्डों का राज्य।
आपमें ऐसी क्षमता है संभाले जो विशाल साम्राज्य।। ४६।।

भाई ! अब इसे अधूरा छोड़ कहीं भी जा सकते हो नहीं।
क्योंकि इसके विकास की बात आपके ही माथे में है।।
अरे इन छह खण्डों को भाई व्यवस्थित कैसे क्या करना।
एकदम सही योजनायें आपके ही दिमाग में हैं ।। ४७।।

सभी लोगों को है हे बन्धु ! आप पर ही अटूट विश्वास।
बीच में मैं आ सकता नहीं आपने जीता है विश्वास।।
आप में अद्भुत क्षमता है आपमें अद्भुत समता है।
आपमें है अपार धीरज और न कोई विषमता है।।४८।।

आपकी गहराई की थाह कोइ भी नाप नहीं सकता।
आपकी महिमा अपरंपार आप हैं अति उदार भाई!।।
भाई ! मैं समझ नहीं पाया आपकी इस उदारता को।
अरे मैं पहुँच नहीं पाया आपकी इस महानता को ।। ४९।।

यद्यपी आप बड़े हैं किन्तु बड़प्पन जान नहीं पाया।
और अन्तरतम के वात्सल्य भाव का ध्यान नहीं आया।।
अरे गम्भीर हृदय की गहराई की थाह नहीं पाया।
अरे रे भाइ! आपकी गरिमा को पहिचान नहीं पाया।। ५०।।

बन्धुवर बिना लड़े ही अरे जीतने और जिताने की।
आपकी यह अद्भुत है कला अरे सर्वस्व लुटाने की।।
आप छह खण्डों से कितने विरक्त यह बात जानने की।
अरे हम में थी क्षमता नहीं बन्धुवर तुम्हें जानने की।। ५१।।

अरे इन्द्रिय विषयों में लिप्त भरत हैं छह खण्डों में रक्त।
जगत के लोग समझते रहे आप तो इकदम रहे विरक्त।।
अगर यह घटना घटती नहीं तो हम भी जान नहीं पाते।
'भरतजी घर में वैरागी' मरम यह जान नहीं पाते।। ५२।।

भरतजी कर दो हमको माफ आपको संकट में डाला।
आप तो थे अपने में मगन व्यर्थ ही हमने उलझाया।।
बन्धु हम कुछ कर सकते नहीं आपको जो-जो करना हो।
बेधड़क करें वह सभी आपको जो भी करना हो।। ५३।।

मुझे इसमें कुछ भी रस नहीं मुझे तो अपने में जाना।
अरे रे निज आतम को छोड़ मुझे तो कहीं नहीं जाना।।
मुझे निज आतम में जमना मुझे निज आतम में रमना।
स्वयं में स्वयं समा जाना मुझे कुछ और नहीं करना।। ५४।।

दुःख का घर असार संसार मुझे ना रंच सुहाता है।
अरे मैं अभी छोड़ दूँ इसे मेरे मन में यह आता है।।
जगत का ऐसा अद्भुत रूप देख मैं यही सोचता हूँ।
मुझे अब इसमें रहना नहीं अरे अन्तरमुख होता हूँ।। ५५।।

आप तो अनुमति करें प्रदान मुझे कुछ नहीं चाहिये और।
करो न अनुमति की कोइ बात और जो चाहो सो ले लो।।
अरे रे मेरे प्रियतम बन्धु ! न तुम मुझसे मुखड़ा मोड़ो।
और क्या अधिक कहूँ हे बन्धु ! मुझे न इसप्रकार छोड़ो।। ५६।।

आ गई वही सामने बात कि जिसकी मुझको शंका थी।
आप भी दीक्षा न ले लें यही मुझको आशंका थी।।
आपके बिना आपका राज अरे मुझसे सम्भलेगा नहीं।
आपके बिना अकेले बन्धु ! अरे मुझसे कुछ होगा नहीं।। ५७।।

अरे हे अनुज ! आपके लिये सभी कुछ सहज छोड़ सकता।
किसी भी कीमत पर हे बन्धु ! मैं मुख मोड़ नहीं सकता।।
आपका साथ चाहिये मुझे अकेला मैं रह सकता नहीं।
आपसे अधिक कहूँ क्या बन्धु ! आपके बिन रह सकता नहीं।। ५८।।

भरतजी बहुत मनाते रहे किन्तु बाहुबलिजी ना रुके।
वे तो गये, गये सो गये रोकने पर भी वे न रुके।।
भरतजी पीछे-पीछे गये उन्होंने मुडकर देखा नहीं।
अरे वे गहरे वन में गये, गये सो गये, गये सो गये।। ५९।।

भरतजी खड़े सोचते रहे और वे तो आगे बढ़ गये।
अरे रे नग्न दिगम्बर होकर वे तो अपने में चढ़ गये।।
वे तो छठे-सातवें गुणस्थान में आते-जाते रहे।
और वे महातपस्वी महाव्रती निश्चल होकर थे खड़े।। ६०।।

अगर ना होता यह दुष्चक्र[१] भाइयों से लड़ने की बात।
सामने ही ना आती बन्धु! और ना होता यह उत्पात।।
प्रेम से रहते सारे भाई और ना होता यह आघात।
लेता दिव्यध्वनि का लाभ सहज ही मिलकर सबके साथ।। ६१।।

भरतजी इकदम हुये उदास भाई को इसप्रकार खोकर।
लौटकर धीरे-धीरे चले अरे वे अवधपुरी की ओर।।
चक्र तो शान्त हो गया किन्तु भरतजी अन्तर से हिल गये।
भाइयों को खोकर भरतेश सैन्यदल में आकर मिल गये।। ६२।।

भाइयों के वियोग में दुखी किसी से कुछ भी बोले नहीं।
मन्द स्वर में धीरे से कहा चलो अब अवधपुरी को चलें।।
सभी थे चलने को तैयार और सब धीरे-धीरे चले।
सभी सेना भी चलने लगी सभी जन अब चलते ही गये।। ६३।।

१. भरतजी यहाँ चक्र को दुष्चक्र कह रहे हैं। दुष्चक्र अर्थात् दुष्ट चक्र।

अरे गाजे–बाजे के साथ नाचते–गाते सभी प्रकार।
और भारी उछाह के साथ सभी लोगों ने सभी प्रकार।।
सभी को पहिनाये थे हार दिये थे विध–विध के उपहार।
अयोध्यावासी लोगों ने किया था स्वागत विविध प्रकार।। ६४।।

यद्यपि अन्तर में गमगीन परन्तु बाह्य सभी व्यवहार।
और वे निभा रहे थे सहज भाव से सभी सहज व्यवहार।।
भरतजी अन्तर–आतम लीन निरन्तर अपने में ही मगन।
अरे रे अन्तर में ही लगी हुई थी उनकी पूरी लगन।। ६५।।

भरत की छह खण्डों की जीत नहीं थी साधारण घटना।
और यह परम–अहिंसक जीत जगत की थी अद्भुत घटना।।
भरत के लिये लोक में अरे महा मंगलमय अवसर था।
किन्तु जो घटा था घटना चक्र भरत के अन्तर को मथ गया।। ६६।।

भरत ना रो ही सकते थे भरत ना हँस ही सकते थे।
इस समय रो करके अपशकुन नहीं कर सकते थे भरतेश।।
बाहुबली से असीम स्नेह और उनका ऐसे जाना।
उन्हें ना हँसने ही देता और ना रोने देता था ।। ६७।।

जीत का था विशाल उत्सव और उसमें शामिल होना।
भरत को था इकदम अनिवार्य और था अति आवश्यक कार्य।।
सभी जन नाच–नाच करके बधाई देने आते थे।
विनय से झुक–झुककर सब लोग बधाई देते जाते थे।। ६८।।

बधाई स्वीकृत करते समय वदन पर मन्द–मन्द मुस्कान।
और स्मित मुद्रा के साथ सभी का करना है आह्वान।।
अरे रे उचित भेंट के साथ सभी का यथायोग्य सन्मान।
सभी लेकर जावें सद्भाव सभी को देना है सन्मान ।। ६९।।

भरत के अन्तर में था द्वन्द्व चक्र का यह महान उत्सव।
प्राण से प्यारे भाई का इसतरह जंगल में जाना।।
न हँसना–रोना कुछ भी बने और अन्तर में आतमराम।
इसतरह उलझा उनका चित्त किन्तु वे थे परिपूरण शान्त।। ७०।।

अरे वे आकुल–व्याकुल नहीं निराकुल थे अपने में शान्त।
चित्त में उठें विकल्प अनन्त नहीं थे वे उनसे आक्रान्त।।
विजय के वैभव का आनन्द बन्धु की याद एक ही साथ।
चित्त में दुविधा पैदा करे किन्तु वे थे दुविधा से पार।। ७१।।

यद्यपि अन्तर में वे अन्तरात्मा रहते आतम लीन।
तथापि बाहर में वे सभी काम में परिपूरण परवीन।।
और जाग्रत रहते वे सदा सहज पर यथासमय सोते।
कि उनके सहजभाव से सभी काम नित यथासमय होते।।७२।।

ज्ञानियों का जीवन तो सदा बन्धुवर ! इसप्रकार रहता।
किन्तु उनके अन्तर में बन्धु ! निरन्तर आतम ही रहता।।
यद्यपि योग्य सभी व्यवहार जगत के यथायोग्य चलते।
तदपि वे अंतरंग से सदा निरन्तर अपने में रहते ।। ७३।।

और ये शुद्ध शुभाशुभभाव निरन्तर होते रहते हैं।
अरे चौथे गुणथानक में सदा ऐसा ही होता है।।
कभी आतम को भूलें नहीं और दुनियादारी भी तो।
जगत के जीवों के भी साथ निरन्तर चलती रहती है।। ७४।।

भरत की अन्तर परिणति को अरे मैं बता नहीं सकता।
चक्रवर्ती के वैभव को अरे मैं गिना नहीं सकता।।
और बाहूबलि का वैराग्य आपको कैसे बतलाऊँ ?।
मैं तो दोनों का ही भगत आपको कैसे समझाऊँ ?।। ७५।।

अरे दोनों व्यक्तित्व महान जगत के श्रेष्ठ महामानव।
और उनकी गौरव गाथा अरे मैं जीवन भर गाऊँ।।
अरे दोनों हि महामानव इसी भव से होंगे भवपार।
भव का भाव नहीं उनमें कि उनका शेष नहीं संसार।। ७६।।

यद्यपि भव में दिखते अभी तथापि वे हैं भव से पार।
जानते हैं वे दोनों भाइ नहीं है इसमें कोई सार।।
यहाँ 'मैं-मैं' का झगड़ा नहीं यहाँ तो 'तुम-तुम' की है बात।
अरे यह राज सम्भालो तुम्हीं अरे दोनों कहते यह बात।। ७७।।

राज से कोई चिपटा नहीं छोड़ने को दोनों तैयार।
'सभी कुछ निश्चित है' - यह बात मानने को दोनों तैयार।।
भाग्य से अधिक समय के पूर्व किसीको कुछ भी मिलता नहीं।
अरे जिसको जो कुछ जब जहाँ अरे मिलना हो मिलता वही।। ७८।।

काललब्धी बाहुबली की अरे अन्तर्मुख होने की।
और घर बार छोड़कर सभी अरे दीक्षा लेने की अभी।।
काललब्धि आई हो भाई ! बताओ कौन टाल सकता।
अगर ना आई हो तो भाई ! बताओ कौन बुला सकता।। ७९।।

भरत की काललब्धि थी अभी अरे चौथे गुणथानक की।
गृहस्थी में रहने की तथा चक्रवर्ती बनने की थी।।
और था भरत क्षेत्र का भाग्य भरत सा नायक पाने का।
सभी कुछ निश्चित ही था ऋषभ केवली ने भी जाना था।।८०।।

भाइ-भाई निबटा लेते बड़ी से बड़ी बात भाई !।
यही सब बतलाती यह कथा और कुछ नहीं बात भाई !।।
'भाईयों से भाई लड़ते' नहीं है इसका यह इतिहास।
शान्ति से होते कैसे काम यहाँ तो है इसका इतिहास।। ८१।।

प्रेम से सने भाइयों को लड़ाका कहने की यह बात।
गले कैसे उतरे बोलो हृदय पर लगता है आघात।।
और क्या सीख मिले भाई समझ में बात नहीं आती।
कथा से सीख मिले कोई बात ऐसी होवे भाई।। ८२।।

यदि कुछ तुम्हें सीखना है कथा से तुम सीखो यह बात।
'लड़ना' नहीं सीखना भाइ ! 'नहीं लड़ना' सीखो हे भाइ !।।
अरे लड़ना तो जानें सभी 'नहीं लड़ना' ही सीखना है।
उलझना नहीं सीखना है सुलझना हमें सीखना है।। ८३।।

सुलझना ही है मुक्तिमार्ग उलझना तो है जग-जंजाल।
जगत की उलझन को कर दूर काट दो तुम जग का जंजाल॥
चाहते हो तुम आतम शान्ति आतमा को अपना लो भाई !।
आतमा में जम जावो भाई ! आतमा में रम जावो भाई !॥ ८४॥

आतमा ही है अपना एक परम मंगल उत्तम अर शरण।
अपन में अपनेपन के साथ अपन में ही अपना आचरण॥
धर्म है एकमात्र कर्तव्य यही है रतनत्रय का रूप।
यही है असली आतमधर्म आतमा का है शुद्धस्वरूप॥ ८५॥

आतमा का जो शुद्धस्वरूप उसे तुम जानो पहिचानो।
उसी में अपनेपन के साथ उसी को निजस्वरूप जानो॥
उसी में हो जाओ तल्लीन उसी में हो जाओ लवलीन।
यही तो परम धरम है बन्धु ! यही है सच्चा मुक्तिमार्ग॥ ८६॥

यही है सच्चा मुक्तिमार्ग इसी से प्राप्त करोगे मुक्ति।
अन्य मारग है कोई नहीं एक यह ही है सच्ची युक्ति॥
इसी से मिलता परमानन्द अरे आनन्द और आनन्द।
अतीन्द्रिय ज्ञान और आनन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द॥ ८७॥

(दोहा)

इसप्रकार पूरा हुआ, भरत विजय अभियान।
अवधपुरी में आ गया, चक्ररत्न का यान॥ ८८॥

अन्तर को मथती रही, बाहुबलि की याद।
एक बरस यों ही रहा, मन में हर्ष-विषाद॥ ८९॥

बाहुबलि जिनराज के, दर्शन के शुभभाव।
मन में जागे भरत के, थुति करने के भाव॥ ९०॥

-●-

छहढाला प्रवचन

बोधिदुर्लभ भावना

अंतिम-ग्रीवकलौं की हद, पायो अनन्त विरियां पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधौ॥१३॥

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

संसार में भ्रमण करते हुए यह जीव दुर्लभ मनुष्यभव प्राप्त करके शुभभावरूप शुक्ललेश्या करके स्वर्ग में भी गया; परन्तु इसमें कोई अपूर्वता नहीं है। इन सबकी अपेक्षा सम्यग्दर्शन और आत्मज्ञान प्राप्त करना महादुर्लभ और अपूर्व है। इसलिए चौथी ढाल में कहा था कि करोड़ों उपाय करके भी हे भव्य! तू सम्यग्ज्ञान प्रगट कर। यह सम्यग्ज्ञान ही विषय-कषाय के दु:खों से छुड़ाकर मोक्ष सुख प्राप्त कराता है। जितने जीव मोक्ष गये हैं, जो जा रहे हैं और आगे जायेंगे - यह सब सम्यग्ज्ञान की ही महिमा है। आत्मज्ञान के सिवाय सुख का दूसरा कोई उपाय नहीं है।

ऐसा आत्मज्ञान पुण्य-पाप के द्वारा उत्पन्न नहीं होता; क्योंकि वह पुण्य-पाप से भिन्न है। पुण्य-पाप तो ज्ञान रहित दु:खरूप परिणाम है, आत्मा का रस-कस तो ज्ञान में है, राग में नहीं। आत्मा चैतन्य रस का अखण्ड पिण्ड है। जैसे शक्कर की डली में सर्वत्र मिठास ही भरी है, इसीप्रकार आत्मा भी सर्वत्र चैतन्य रस से भरा है। ऐसे आत्मा के सन्मुख उपयोग करके उसे जानना ही सम्यग्ज्ञान है। वह सम्यग्ज्ञान अतीन्द्रिय सुख के वेदन सहित है। अज्ञानी शुभराग से ज्ञान और सुख की उत्पत्ति मानता

है; परन्तु ऐसा मानना भ्रम है। उसे शुभराग और सम्यग्ज्ञान में क्या अन्तर है – इसकी खबर नहीं है। वह अन्तर इसप्रकार है –

एक तो राग भाव है और दूसरा वीतरागभाव है।

राग, मोह की जाति का है और ज्ञान, धर्म की जाति का है।

राग संसार का कारण है और ज्ञान मोक्ष का कारण है।

राग में आकुलता का वेदन है और ज्ञान में शान्ति का वेदन है।

राग में एकान्त दुख है और ज्ञान में परम सुख है।

राग से कर्मबन्ध होता है और ज्ञान कर्मों से छुड़ाता है।

राग विभाव है और ज्ञान स्वभाव है।

राग अशुद्धता है और ज्ञान शुद्धता है।

राग हेय है और ज्ञान उपादेय है।

शुभराग ज्ञान से अत्यन्त भिन्न है, तो भी अज्ञानी शुभराग से सम्यग्ज्ञान या धर्म होना मानता है अर्थात् वह उन्हें एक-दूसरे से मिलाता है, उनमें भेदज्ञान नहीं करता। राग होना दुर्लभ नहीं है; परन्तु राग रहित आत्मा का अनुभव होना दुर्लभ है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान होने के बाद चारित्र दशा होना दुर्लभ है। ऐसी दुर्लभ-रत्नत्रय बोधि को मुनिराज अपने आत्मा में साधते हैं। वे अपने आत्मस्वभाव को ही साधनरूप करके बोधि को साधते हैं। बोधि की साधना राग द्वारा नहीं होती। दया, सत्य आदि के शुभराग से भी सम्यग्दर्शनादि की साधना नहीं होती, फिर हिंसा-असत्यादि पाप भाव की तो बात ही कहाँ रही? पापभाव तो दुर्गति का कारण है और पुण्यभाव भी देवगति के बन्ध का कारण है; अतः उससे भी मोक्षमार्ग नहीं सधता। चैतन्यतत्त्व तो शुभ और अशुभ समस्त राग से पार है। उसकी सन्मुखता से ही सम्यक्त्वादिरूप मोक्षमार्ग सधता है अर्थात् उस रूप परिणमन होता है। इसप्रकार वीतरागमार्गी सन्तों

ने स्वयं बोधिरूप धर्म की साधना की और अन्य जीवों को भी उसकी साधना का उपदेश दिया है। इस उपाय द्वारा आत्मा की प्राप्ति करना सुलभ है, सुख के वेदन सहित आत्मा का अनुभव होता है।

इस जीव ने आज तक अपने स्वभाव को प्राप्त नहीं किया, इसलिए वह दुर्लभ है; परन्तु अब स्वयं को स्वयं से बोधि प्राप्त होने से वह सुलभ हो गया। जिसने पहले कभी कोई रास्ता न देखा हो तो पहली बार वहाँ जाना कठिन लगता है; परन्तु बारम्बार वहाँ जाने से अभ्यास हो जाने से वहाँ जाना सुलभ लगने लगता है, सहज लगने लगता है। इसीप्रकार धर्मात्मा जीव को बारम्बार अभ्यास से आत्मा का अनुभव और सम्यग्दर्शनादि सुलभ लगने लगते हैं, सहज लगने लगते हैं। अहा! मेरी सम्यक्बोधि मेरे स्वभाव द्वारा मुझे सुलभ हो गयी है। नियमसार में कहा है कि मुनिजनों को आत्मा के आनन्द की अनुभूति सतत् सुलभ है। इसप्रकार आत्मप्राप्ति को सुलभ कहना निश्चय है और दुर्लभ कहना व्यवहार है।

अज्ञानी जीव संसार में भ्रमण करते-करते देवलोक में भी गया अर्थात् उसने पुण्य तो किया; परन्तु निजस्वभाव का साधन नहीं किया। राग रहित निज-पद को जानकर पर-पद में ही रचा रहा। अरे ! जगत के जीवों को निज-बोधि कैसी दुर्लभ है। ऐसी महादुर्लभ बोधि निजस्वभाव के साधन से मुझे प्राप्त हुई है – इसप्रकार धर्मी को स्वभाव की परम महिमा आती है।

शुद्धज्ञानमय बोधि का स्वरूप जानना तथा निज साधन से उसकी प्राप्ति होती है – ऐसा जानना ही सच्ची बोधिदुर्लभ भावना है। राग द्वारा बोधि की उत्पत्ति माननेवाले को सच्ची बोधिदुर्लभ भावना नहीं होती, उसे बोधि के नाम पर राग की ही भावना होती है। भाई ! राग तो शत्रुपक्ष का भाव है, वह तुझे बोधि का साधन कैसे हो सकता है? तेरी स्वयं की चैतन्य -चमत्कारी वस्तु स्वयं ही अपने में बोधि का साधन होती है। तू बाह्य

साधनों की शोध मत कर? अन्तर्मुख होकर अपने आत्मा को ही साधनरूप से ग्रहण कर तो अपूर्व और दुर्लभ बोधि तुझे सुलभ हो जाएगी। तूने आज तक अपनी चैतन्यवस्तु को लक्ष्य में नहीं लिया, इसलिए तुझे अपनी ही बोधि दुर्लभ हो गई। अरे! अपनी ही प्राप्ति कहीं दुर्लभ हो सकती है? अपना स्वभाव अपने लिए तो सुलभ ही है; परन्तु उसे पर-पदार्थों या राग में से प्राप्त करना चाहे तो वह कैसे मिलेगा? भाई! तेरा स्वभाव तुझमें ही है, इसलिए वह तेरे लिए सुलभ है - ऐसा जानकर तू प्रसन्न हो जा और अन्तर्मुख होकर अपने स्वभाव को साधन बना, इससे तेरी बोधि सुलभ हो जाएगी। जिसप्रकार मुनियों ने इसे निज में साधा है, उसीप्रकार तू भी इस दुर्लभ बोधि को निज में साध ले। इससे तेरे जन्म-मरण का अन्त आ जायेगा और तुझे मोक्षसुख की प्राप्ति होगी।

आशारूपी पिशाची से ग्रस्त प्राणी सदा कल्पना-लोक में विचरण करता रहता है, जीवन के ठोस धरातल पर उसके पैर नहीं टिकते। सामने खड़ी मौत भी उसके स्वप्नसंसार को भंग नहीं कर पाती है। आशारूपी डोरी से बँधा हुआ प्राणी सम्पूर्ण जीवन यों ही निकाल देता है। सफलता की संभावना के अभाव में भी इसकी आशा भग्न नहीं होती। कहता है - आशा पर तो आसमान टिका है। यदि आशा समाप्त हो जाए तो जीवन का रस समाप्त हो जाए। सुख और शान्ति की आशा की पूर्ति जीवनभर न होने पर भी आशा लगाए ही रहता है। जहाँ आशा की सफलता की क्षीण-सी भी रेखा दिखाई न दे, वहाँ भी निराश नहीं होता।

- चिन्तन की गहराईयाँ, पृष्ठ 9

नियमसार प्रवचन -

आत्मध्यान ही प्रतिक्रमण है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९४ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं -

पडिकमणणामधेये सुत्ते जह वण्णिदं पडिक्कमणं।
तह णच्चा जो भावइ तस्स तदा होदि पडिक्कमणं॥९४॥

(हरिगीत)

प्रतिक्रमण नामक सूत्र में वर्णन किया जिसरूप में।
प्रतिक्रमण होता उसे जो भावे उसे उस रूप में॥९४॥

प्रतिक्रमण नामक सूत्र में प्रतिक्रमण का स्वरूप जिसप्रकार बताया गया है, उसे जब मुनिराज तदनुसार भाते हैं; तब उन्हें प्रतिक्रमण होता है।

(गतांक से आगे....)

(वसंततिलका)

यस्य प्रतिक्रमणमेव सदा मुमुक्षो-
र्नास्त्यप्रतिक्रमणमप्यणुमात्रमुच्चैः।
तस्मै नमः सकलसंयमभूषणाय
श्रीवीरनन्दिमुनिनामधराय नित्यम्॥१२६॥

(वसंततिलका)

अरे जिन्हें प्रतिक्रमण ही नित्य वर्ते।
अणुमात्र अप्रतिक्रमण जिनके नहीं है॥
जो सकल संयम भूषण नित्य धारें।
उन वीरनन्दि मुनि को नित ही नमें हम॥१२६॥

मुमुक्षु ऐसे जिन्हें (मोक्षार्थी ऐसे जिन वीरनन्दि मुनि को) सदा प्रतिक्रमण ही है और अणुमात्र भी अप्रतिक्रमण नहीं है, उन सकल-संयमरूपी भूषण के धारण करनेवाले श्री वीरनन्दि नाम के मुनि को नित्य नमस्कार हो।

चौबीस घन्टे चिदानन्द में रमण करनेवाले सन्तों को सदा प्रतिक्रमण होता है। परलक्ष्य से हटकर चैतन्यगुफा में गुप्त होनेवाले मुनि को जो परमार्थ-प्रतिक्रमण है; वही धर्म है, मुक्ति का कारण है, कल्याणकारी है।

मुनियों को यहाँ 'मुमुक्षु' कहा है। उन्हें चैतन्य में लीनता से सदा शुद्धि की वृद्धि ही हुआ करती है और राग का अभाव होता जाता है। इसलिये उनके सदा प्रतिक्रमण है और अणुमात्र भी अप्रतिक्रमण नहीं है।

जो प्रतिक्रमण व सामायिक साक्षात् मुक्ति का कारण है, वह प्रतिक्रमण और सामायिक कैसे होंगे – यह विचार करने की बात है। बाहर में बैठे रहने की क्रिया सामायिक नहीं है; किन्तु चैतन्य में एकाग्र होने पर पूर्ण-पाप रहित समताभाव का लाभ ही सामायिक है और वही मुक्ति का कारण है।

सामायिक के चार भेद हैं :-

(१) दर्शनसामायिक – चैतन्यबिम्ब ज्ञायक आत्मा का भान और सम्यग्दर्शन प्रथम दर्शनसामायिक है।

(२) ज्ञानसामायिक – वीतरागी आत्मस्वभाव का सम्यग्ज्ञान ज्ञान-सामायिक है।

(३) देशविरतिसामायिक – सम्यग्दर्शन के बाद चैतन्य में आंशिक लीनता होने पर आंशिक राग का अभाव होना देशविरतिसामायिक है।

(४) सर्वविरतिसामायिक – समस्त परिग्रहरहित मुनियों के चैतन्य में एकाग्रता होने पर वीतरागी चारित्र प्रगट होनेवाला सर्वविरति-सामायिक है।

श्री वीरनन्दि नाम के मुनि सकलसंयमरूपी आभूषण के धनी थे, उन्हें यहाँ नमस्कार किया है।

इसप्रकार, सुकविजनरूपी कमलों के लिये जो सूर्य समान हैं और पाँच इन्द्रियों के विस्तार रहित देहमात्र जिन्हें परिग्रह था ऐसे श्री पद्मप्रभमलधारिदेव द्वारा रचित नियमसार की तात्पर्यवृत्ति नामक टीका में (अर्थात् श्रीमद्भगवत् कुन्दकुन्दाचार्यदेवप्रणीत श्री नियमसार परमागम की निर्ग्रन्थ मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव विरचित तात्पर्यवृत्ति नाम की टीका में) **परमार्थ-प्रतिक्रमणाधिकार** नाम का पाँचवाँ श्रुतस्कन्ध समाप्त हुआ। **(क्रमशः)**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

विभुत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

प्रश्न – 'केवलज्ञान की अपेक्षा तो प्रत्येक पर्याय नियत/क्रमबद्ध है; परन्तु श्रुतज्ञान अल्पज्ञ हैं, इसलिये श्रुतज्ञान की अपेक्षा भी पर्यायें क्रमबद्ध होती हैं – यह बात समझ में नहीं आती है।

उत्तर – अरे भाई! शक्ति और शक्तिवान द्रव्य के भेद का लक्ष्य छोड़कर अभेद एक त्रिकाली ज्ञायकस्वभाव के सन्मुख होने पर ही सम्यग्दर्शन प्रकट होता है और **सभी भावश्रुतज्ञान में भी सर्वपर्यायें क्रमबद्ध ही होती हैं, ऐसा निर्णय होता है।**

अहाहा....! **केवलज्ञान में जो वस्तु व्यवस्था भासी है, उससे विपरीत वस्तुव्यवस्था श्रुतज्ञान में भासे तो वह सम्यक् श्रुतज्ञान ही कैसा?** वह तो कुश्रुतज्ञान है, मिथ्याज्ञान है।

भाई! हम तो वर्षों से कहते आ रहे हैं कि प्रत्येक द्रव्य की प्रतिसमय जो-जो पर्यायें होती हैं, वे पर्यायें क्रमबद्ध-क्रमनियमित ही प्रगट होती हैं, उनमें आगे-पीछे या उल्टी-सुल्टी होने का प्रश्न ही नहीं है।

भाई! यह तो केवली भगवान का फरमान है। जैसे मोती की माला में जहाँ-तहाँ, जो-जो मोती हैं, वह वहाँ-वहाँ (प्रकाशित) है। उसे आगे-पीछे करने जायें तो माला टूट जायेगी।

वैसे ही **प्रत्येक द्रव्य की तीन काल में जो-जो पर्यायें प्रगट होनी हैं, वे ही प्रगट होती हैं। उन्हें आगे-पीछे करने का विकल्प मिथ्या है। आगे-पीछे करने से पर्यायों का क्रम टूट जायेगा और अखण्ड द्रव्य सिद्ध नहीं होगा।**

प्रश्न – क्रमबद्ध का अर्थ एक के बाद एक होना तो ठीक है; परन्तु पर्याय भी निश्चित है यह समझ में नहीं आता।

उत्तर – अरे भाई! द्रव्य की त्रिकालवर्ती प्रत्येक पर्याय का क्रम नियत-निश्चित ही है, कोई भी पर्याय कभी भी उल्टी-सुल्टी नहीं हो सकती।

प्रत्येक पर्याय अपने क्षणिक उपादान की योग्यतानुसार जिस काल में, जो होने योग्य है, उसी काल में वही अपनी निश्चित योग्यता से प्रगट होती है।

देखो! यह विभुत्वशक्ति द्रव्य-गुण में व्यापक है और द्रव्य की अनन्त शक्तियाँ क्रमबद्ध पर्यायरूप परिणमती हैं। बहिर्दृष्टि होने के कारण उसका अन्दर में स्वीकार नहीं होता; परन्तु एक, अभेद, शुद्ध अंतःतत्त्व की दृष्टि करते ही पर्याय क्रमबद्ध होती है – इसका यथार्थ निर्णय होता है। यह बात प्रवचनों में हमने विस्तार से कही है।

प्रश्न – क्रमबद्धपर्याय मानने से क्या नियतवाद हो जाता है?

उत्तर – अरे भाई! **जैसे द्रव्य और उसकी शक्ति नियत और निश्चित है, वैसे ही अपनी क्षणिक उपादान की योग्यता से समय-समय में प्रगट हुई प्रत्येक पर्याय भी नियत ही है। 'जिस समय जो पर्याय होने योग्य है, वही होती है' ऐसे क्रमबद्ध का यथार्थ निर्णय द्रव्यस्वभाव पर दृष्टि जाने से होता है।**

अज्ञानी को द्रव्यदृष्टि न होने से यह बात जमती नहीं है। वह कहता है कि श्रुतज्ञान की अपेक्षा नियत नहीं है, परन्तु भाई! तेरा यह तर्क यथार्थ नहीं है; क्योंकि **श्रुतज्ञान की अपेक्षा भी प्रत्येक पर्याय क्रमबद्ध ही है –** ऐसा निर्णय सम्यग्दृष्टि को होता है।

भाई! जरा दृष्टि को सूक्ष्म करके यह समझने का प्रयत्न कर!

प्रश्न – पंचास्तिकाय की १५५वीं गाथा में ऐसा कहा है – संसारी जीव को नियत और अनियत दोनों प्रकार की पर्यायें होती हैं – इस कथन से क्रमबद्धपर्याय के संबंध में हमारे मन में प्रश्न उत्पन्न होता है हम क्या करें?

उत्तर – हाँ, वहाँ नियत और अनियत की बात है, **वहाँ स्वभाव और स्वभाव में लीन निर्मलपर्याय को नियत कहा है और जो विभावरूप पर्याय प्रगट होती है उसे अनियत कहा है; परन्तु अनियत पर्याय का अर्थ पर्याय आगे-पीछे हो या उल्टी-सुल्टी हो ऐसा नहीं है।**

अनियत का अर्थ है – स्वभाव में अनवस्थित, अनेकरूप विकारी पर्याय; परन्तु ऐसी अनियत पर्याय भी जिस समय प्रगट होती है, वह नियत क्रमबद्ध ही प्रगट होती है। गाथा और टीका में गुण-स्वभाव और निर्मलपर्याय को नियत कहा है।

भाई! अपनी कल्पनाबुद्धि से शास्त्रों का अर्थ करना कोई समझदारी नहीं है। पानी का शीतल स्वभाव है और उसकी स्वभावलीन शीतलदशा नितय है तथा अग्नि के निमित्त से पानी की उष्णदशा अनियमित है – ऐसी बात नहीं है।

जैनतत्त्व मीमांसा में पण्डित फूलचन्द सिद्धान्त शास्त्री ने इस सम्बन्ध में कहा है कि ''जब से 'सर्व द्रव्यों की पर्यायें क्रमनियमित (क्रमबद्ध) होती है;' यह तथ्य सामने आया है, तब से ही विद्वानों द्वारा ऐसा कुतर्क उठाया जाता है। पहले तो इस ओर किसी का लक्ष्य ही नहीं था; परन्तु ऐसा कुतर्क करते समय वे यह क्यों भूल जाते हैं कि जैनधर्म में तत्त्वप्ररूपणा का मूल आधार ही केवलज्ञान है।''

श्रीजयसेनाचार्य ने प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्व प्रज्ञापन को सम्यग्दर्शन

अधिकार कहा है। **ज्ञेय का स्वभाव ही ऐसा है कि जिस समय जो पर्याय होनी है, वही होगी, वह उसका जन्मक्षण है –** ऐसी प्रतीति सम्यग्दृष्टि को होती है।

सम्यग्दर्शन का विषय भले ही अभेद एक ज्ञायक हो, परन्तु **ज्ञानप्रधान शैली से ज्ञान और ज्ञेय दोनों तत्त्वों की यथार्थ प्रतीति को सम्यग्दर्शन कहा है। अकेले द्रव्य की अभेद दृष्टि वह सम्यग्दृष्टि – यह श्रद्धाप्रधान कथन है; ज्ञेयतत्त्व और ज्ञातृत्व की यथार्थ प्रतीति जिसका लक्षण है, वह ज्ञानपर्याय है। ज्ञेय और ज्ञाता की ज्ञातृतत्त्व में क्रियान्तर से निवृत्तिरूप परिणति जिसका लक्षण है, वह चारित्रपर्याय है –** यह ज्ञानप्रधान शैली में सम्यग्दर्शन की व्याख्या है।

श्रीमद्‌राजचन्द रचित आत्मसिद्धि में '**अनुभव, लक्ष्य, प्रतीति – ये शब्द आते हैं; वहाँ अनुभव को चारित्र की पर्याय, लक्ष्य को ज्ञान की पर्याय और प्रतीति को श्रद्धा की पर्याय कहा है।**

तथा **प्रवचनसार में अनुभव को ज्ञान की पर्याय कहा है** और शुभराग की क्रिया से निवृत्ति और **अपने ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में रमणता को चारित्रपर्याय कहा है।**

जो जीव ऐसे अपने विभुरूप अपने शुद्ध चैतन्यस्वरूप आत्मा का विश्वास करके उसमें स्थिर होता है। वह अनन्तगुणों की विभूति को प्राप्त होता है। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : दृष्टि का जोर कहाँ देने पर सम्यग्दर्शन प्रगट होगा ?

उत्तर : ज्ञायक निष्क्रियतत्त्व के उपर दृष्टि डालो न ! पर्याय के उपर जोर देने से क्या लाभ ? यह मेरी क्षयोपशम की पर्याय बढी, यह मेरी पर्याय हुई-इसप्रकार पर्याय के उपर लक्ष्य देने से क्या काम बनेगा? पर्याय पलटने पर उस अंश में त्रिकाली वस्तु थोड़े ही आ जाती है?

अरे भाई ! त्रिकाली ध्रुवदल जो नित्यानन्द प्रभु है, उसके उपर दृष्टि का जोर दो न ! ज्ञानानन्द सागर की तरंगें उछलती हैं, उस पर लक्ष्य डालो न ! तरंगों को न देखकर आनन्द सागर के दल उपर दृष्टि डालो अर्थात् अनादि क्षणिकपर्याय को ही लक्ष्य बना रहे हो, उसको छोड़ दो और त्रिकाली ध्रुव नित्य ज्ञायक दल के उपर दृष्टि को दृढ स्थापित करो तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की निर्मल पर्याय प्रगट होगी।

प्रश्न : मोक्षमार्ग में धारणाज्ञान के बल से आगे नहीं बढते तो किसके बल से आगे बढते हैं?

उत्तर : द्रव्यस्वभाव के बल से आगे बढा जाता है। ज्ञायकभाव, चैतन्यभाव, द्रव्यभाव आदि जिसके ही नाम हैं-इसकी तरफ का जोर आना चाहिए।

प्रश्न : स्वानुभव मनजनित है या अतीन्द्रिय है ?

उत्तर : वास्तव में स्वानुभव में मन और इन्द्रियों का अवलम्बन नहीं है, इसलिये वह अतीन्द्रिय है; परन्तु स्वानुभव के समय मति-श्रुतज्ञान विद्यमान है और वह मति-श्रुतज्ञान मन अथवा इन्द्रियों के अवलम्बन

बिना होता नहीं, इस अपेक्षा से स्वानुभव में मन का अवलम्बन भी कहा गया है। वास्तव में जितना मन का अवलम्बन टूटा, उतना ही स्वानुभव है- स्वानुभव में ज्ञान अतीन्द्रिय है।

प्रश्न : अनुभव द्रव्य का है या पर्याय का ?

उत्तर : अनुभव में अकेला द्रव्य या अकेली पर्याय नहीं है; किन्तु स्वसन्मुख झुकी हुई पर्याय द्रव्य के साथ तद्रूप हुई है; अत: द्रव्य-पर्याय के बीच में भेद नहीं रहा; ऐसी जो दोनों की अभेद अनुभूति- वह अनुभव है। द्रव्य और पर्याय के बीच में भेद रहे, तब तक निर्विकल्प अनुभव नहीं होता।

प्रश्न : जिससमय त्रिकाली द्रव्य के आश्रय से निर्विकल्प आनन्द की अनुभूति होती है, उसीसमय मैं आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ-ऐसा विचार आता है क्या ?

उत्तर : निर्विकल्प अनुभूति के काल में आनन्द का वेदन है; किन्तु विकल्प नहीं है। जब निर्विकल्प से विकल्प में आता है, तब ध्यान में आता है कि आनन्द का अनुभव हुआ था; परन्तु आनन्द के अनुभवकाल मैं 'आनन्दानुभव करता हूँ'- ऐसा भेद नहीं है, वेदन है।

प्रश्न : जिसप्रकार आम का स्वाद आत्मा को आता है; उसीप्रकार आत्मा के अनुभव का स्वाद कैसा होता है ?

उत्तर : आम तो जड़ है; अत: उस जड़ का स्वाद आत्मा को आता नहीं। आम के मीठे रस का ज्ञान होता है और आम अच्छा है- ऐसी ममता के राग का दु:खरूप स्वाद आत्मा को आता है। आत्मा के अनुभव का जो अतीन्द्रिय आनन्द आता है, वह वचन अगोचर है; अनुभवगम्य है।

प्रश्न : आप पर की पर्याय को परद्रव्य कहो; परन्तु स्व की निर्मल पर्याय को भी परद्रव्य क्यों कहते हैं ?

उत्तर : परद्रव्य के लक्ष्य के समान निर्मल पर्याय के लक्ष्य से भी राग होता है; अत: उसे भी परद्रव्य कहा है। वह द्रव्य से सर्वथा भिन्न है, ऐसा

जोर दिये बिना दृष्टि का जोर द्रव्य पर नहीं जाता; इसलिए निर्मल पर्याय को भी परद्रव्य, परभाव तथा हेय कहा है। जिसे पर्याय का प्रेम है, उसका लक्ष्य परद्रव्य पर जाता है; इसलिये उसे प्रकारान्तर से परद्रव्य का ही प्रेम है। परम सत्यस्वभाव ऐसे द्रव्यसामान्य के उपर लक्ष्य जाना अलौकिक बात है।

प्रश्न : इस आत्मा का स्वरूप विचार में आने पर भी प्रगट क्यों नहीं होता?

उत्तर : इसके लिए योग्य पुरुषार्थ चाहिए। अन्दर में अपार शक्ति पड़ी है, उसका माहात्म्य आना चाहिए। वस्तु तो प्रगट है ही, पर्याय की अपेक्षा से उसे अप्रगट कहा जाता है। वस्तु कहीं आवरण से आच्छादित नहीं है। हाँ, प्रथम वस्तु का माहात्म्य आवे; परन्तु ऐसा है नहीं। सर्वप्रथम माहात्म्य आना चाहिए, पश्चात् माहात्म्य आते-आते भान हो जाता है।

प्रश्न : आत्मा के भिन्न-भिन्न गुण ध्यान में आते हैं, फिर भी अभेद ध्यान में क्यों नहीं आता ?

उत्तर : स्वयं ध्यान में लेता नहीं; इसलिए नहीं आता। अभेद को लक्ष्य में लेना तो अन्तिम स्थिति है। निर्विकल्प होने पर ही अभेद आत्मा लक्ष्य में आता है।

प्रश्न : उसे लक्ष में लेना कठिन पड़ता है ?

उत्तर : प्रयत्न करो ! घबड़ाने जैसी बात नहीं है। अभेद आत्मा अनुभव में आ सकने योग्य है; इसलिए धीरे-धीरे प्रयास करना, निराश मत होना। ऐसे काल में ऐसी उँची बात सुनने को मिली है- यही क्या कम है ?

प्रश्न : सम्यग्दर्शन होने से पहले किसप्रकार के विचार होते हैं कि जिनका अभाव करके सम्यग्दर्शन होता है ?

उत्तर : किसप्रकार के विचार चलते हैं, इसका कोई नियम नहीं है। तत्त्व के किसी भी प्रकार के विचार हो सकते हैं, जिनका अभाव करके सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है। •

समाचार दर्शन -

सिद्धचक्र मंडल विधान सानन्द संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन में नववर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 25 दिस. 2020 से 1 जनवरी 2021 तक श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन एवं अनेक विद्वानों की मंगल वाणी से हुआ।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा एकत्व-विभक्त आत्मा (रोला शतक) पर प्रवचन का लाभ मिला।

श्री सिद्धचक्र विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती भारतीबेन विजयकुमारजी जैन परिवार हाथरस मुम्बई एवं मण्डल उद्घाटनकर्ता श्री सतीशजी, अर्चनाजी यशजी परिवार इन्दौर थे। मंगल कलश विराजमानकर्ता श्रीमती भारतीबेन-विजयकुमारजी जैन, श्रीमती अर्चना-सतीशजी, यशजी, श्रीमती सोनल मुकेशजी जैन, श्रीमती चारु अखिलजी जैन परिवार, श्रीमती चंद्रकांता-आनन्दजी पाटनी परिवार इन्दौर थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान में पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर का समागम प्राप्त हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर प्रसारित हुआ, जिसका सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया। कार्यक्रम में पण्डित सुदीपजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, श्री प्रेमजी जैन इन्दौर, रोशनी जैन औरंगाबाद आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

संपूर्ण आयोजन पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में संपन्न हुआ।

नूतन वर्षाभिनन्दन संपन्न

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में आयोजित सिद्धचक्र महामंडल विधान के अवसर पर दिनांक 31 दिसम्बर को **'नूतन वर्षाभिनन्दन - श्री जिनेन्द्र के चरणों में सादर वन्दन'** नामक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जिनेन्द्र भक्ति, कविता पाठ, अर्हम् टैलेन्ट आदि कार्यक्रम हुये, साथ ही डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। रात्रि 9.30 से 12.30 तक हुये इस कार्यक्रम में देश-विदेश के हजारों साधर्मियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर जिनेन्द्र भक्ति पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित समकितजी खनियांधाना द्वारा तथा कविता पाठ पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित संयमजी शास्त्री द्वारा किया गया। नव वर्ष के अवसर पर देश-विदेश के अनेक साधर्मियों ने अपने विचार एवं संकल्प व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अचिन्त्यजी ग्वालियर एवं संचालन मोटिवेशनल स्पीकर युवा विद्वान पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया। आभार प्रदर्शन श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली (अध्यक्ष-श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर) एवं श्रीमती सोनल मुकेशजी जैन इन्दौर ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर भी उपस्थित रहे।

युवा शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ऑनलाइन 8वाँ अन्तर्राष्ट्रीय युवा शिविर दिनांक 29 से 31 दिसम्बर तक रत्नत्रय मण्डल विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त दोनों समय पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं दोपहर में पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 31 दिसम्बर को रात्रि में 11.30 से 12.15 तक विशेष आध्यात्मिक भक्ति का आयोजन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित समकितजी शास्त्री गुना एवं पण्डित उर्विषजी शास्त्री देवलाली द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई द्वारा किया गया।

ढाईद्वीप में गोष्ठी संपन्न

ढाईद्वीप जिनायतन में आयोजित सिद्धचक्र विधान के अवसर पर दिनांक 27 दिसम्बर को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अध्ययनरत उदीयमान विद्वानों द्वारा '**सिद्धचक्र विधान : एक परिशीलन**' विषय पर गोष्ठी सानन्द संपन्न हुई।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने की।

इस अवसर पर **सिद्ध परमेष्ठी : विभिन्न परिभाषाओं में** विषय पर अरविन्द जैन खड़ैरी, **आगम के आलोक में : विधान का यथार्थ परिचय** विषय पर संदेश जैन दिल्ली, **विधानचूड़ामणि सिद्धचक्र विधान : क्या और कैसे** विषय पर संयम जैन खनियांधाना, **प्रथमानुयोग के परिप्रेक्ष्य में : अष्टाह्निका का स्वरूप एवं सिद्धचक्र से संबंध** विषय पर स्वस्ति सेठी जयपुर, **सिद्धचक्र विधान का कलापक्षीय सौंदर्य** विषय पर आप्तअनुशील जैन दमोह, **सिद्धचक्र विधान में सैद्धांतिक सौंदर्य** विषय पर संयम जैन दिल्ली, **विधान चूड़ामणि सिद्धचक्र विधान और ग्रंथाधिराज समयसार** विषय पर पवित्र जैन आगरा, **सिद्धचक्र विधान के संबंध में प्रचलित भ्रांतियों की जड़ एवं उससे मुक्ति** विषय पर अमन जैन आरोन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण शिवराज स्वामी मानगांव ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अर्पित जैन भगवां ने किया। आभार प्रदर्शन विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने एवं संयोजन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

22वाँ JAANA शिविर संपन्न

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 8 से 10 जनवरी 2021 तक अमेरिका और कनाडा के विविध प्रांतों में फैले हुए आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिये 22वाँ वार्षिक शिविर ऑनलाइन लगाया गया।

शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन विधान एवं दोपहर में बालकों द्वारा विशेष प्रस्तुति की गई।

सम्पूर्ण शिविर JAANA के डायरेक्टर श्री अतुलभाई-चारु खारा, डॉ. संजीव गोधा, श्री पौरांग-निकेता पारेख, श्रीमती रोशनी सेठी और श्री अनंत-ऋचा पाटनी के निर्देशन में हुआ। श्री क्षितिज-शीतल शाह का विशेष सहयोग रहा। शिविर में यूट्यूब एवं ज़ूम एप के माध्यम से लगभग 1000 से अधिक लोगों ने लाभ लिया।

जिनागमसार श्रोता गोष्ठी संपन्न

आचार्य अकलंक जैन न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा के तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 30 दिस.तक जिनागमसार श्रोता गोष्ठी का आयोजन हुआ।

गोष्ठी के अन्तर्गत डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा ऑनलाइन चलायी जा रही कक्षाओं के श्रोताओं द्वारा ही द्रव्यसंग्रह, गोम्मटसार, रत्नकरण्डश्रावकाचार, भक्ष्य-अभक्ष्य, तत्त्वार्थसूत्र आदि विषयों पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। गोष्ठी का मंगलाचरण, संयोजन, संचालन आदि सभी कार्य श्रोताओं द्वारा ही किया गया; प्रतिदिन दोनों समय आयोजित कुल 18 गोष्ठियों में 190 साधर्मियों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रथम दिन उद्घाटन के अवसर पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा द्वारा विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त अध्यक्ष, विशिष्ट विद्वान के रूप में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित विक्रांतजी सोलापुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आकाशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित मनीषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे, पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री कोटा, ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा, डॉ. ज्योति सेठी जयपुर, डॉ. मनीषा जैन जयपुर आदि का समागम प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का निर्देशन डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

पाठकों से निवेदन

वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिका के कवर पृष्ठ पर प्रतिमाह अलग-अलग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों/मन्दिरों की फोटो प्रकाशित की जाती है। आपसे निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र की सुन्दरतम आकर्षक फोटो (शिखर सहित) भेजें, ताकि हम समयानुसार उसे छाप सकें। मन्दिर का फोटो डाक द्वारा निम्न पते पर या सॉफ्टकॉपी ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। ● पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.), मोबाइल नं. 9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

E-mail - ptstjaipur67@gmail.com

शोक समाचार

(1) कोलकाता निवासी श्रीमती शोभाजी जैन (बजाज) धर्मपत्नी श्री अशोकजी जैन (बजाज) का दिनांक 29 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं, कोलकाता मुमुक्षु मण्डल की प्रत्येक गतिविधि में आपका सक्रिय योगदान था, पूरे परिवार में जैनधर्म के संस्कार आपकी ही प्रेरणा से हुये। अन्त समय तक उन्होंने धर्म आराधना नहीं छोड़ी।

(2) एलोरा (महा.) निवासी श्री पन्नालालजी गंगवाल का दिनांक 25 दिसम्बर को 92 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, एलोरा गुरुकुल में सचिव पद पर कार्यरत रहकर तन-मन-धन से सहयोग किया तथा अनेक छात्रों को टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु प्रेरित किया।

(3) बेलगाम (कर्नाटक) निवासी श्री अण्णाराव कुंदप्पाजी का दिनांक 21 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने आचार्य कुन्दकुन्द की तपो व समाधि स्थली गुरुक्षेत्र कुंदाद्री बेट के विकास व संवर्धन में बहुत योगदान दिया है।

(4) मौ (म.प्र.) निवासी श्री राजमलजी प्रज्ञा चक्षु का दिनांक 5 जनवरी को 89 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। आप जन्म से नेत्रहीन होने पर भी स्वाध्याय की रुचि रखते थे, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी और ब्र. रवीन्द्रजी के प्रवचनों का लाभ लेते रहते थे। आपने नाटक समयसार, छहढाला आदि अनेक ग्रंथ कंठस्थ कर रखे थे। **– ब्र. सत्येन्द्रजी**

(5) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्रथम बैच के स्नातक ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली की बड़ी बहन **खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती कस्तूरीदेवी जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालालजी जैन का दिनांक 7 जनवरी को पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2200/- रुपये प्राप्त हुए।

(6) रतलाम (म.प्र.) निवासी श्री कांतिलालजी बड़जात्या पुत्र श्री झमकलालजी बड़जात्या का दिनांक 7 अक्टूबर को आकस्मिक देहावसान हो गया। आपके ही परिवार के **श्री प्रकाशचंदजी बड़जात्या** का दिनांक 28 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। आपका परिवार गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समय से ही टोडरमल स्मारक की प्रत्येक गतिविधि से जुड़ा हुआ है। आपके परिवार द्वारा रतलाम व आसपास के क्षेत्रों में मुमुक्षु समाज की गतिविधियाँ संचालित की जाती रही हैं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 3200/- रुपये प्राप्त हुये।

(7) जबलपुर (म.प्र.) निवासी श्री सुनीलजी जैन का दिनांक 9 जनवरी 2021 को 55 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थी आयुष जैन के पिताजी थे।

(8) आरोन (म.प्र.) निवासी श्री मिन्टूलालजी जैन का दिनांक 3 जनवरी को 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के शास्त्री तृतीयवर्ष के विद्यार्थी अमन जैन के दादाजी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(9) टडा – सागर (म.प्र.) निवासी श्री राजकुमारजी नेता का दिनांक 22 नवम्बर को 76 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी थे। आपके 4 नाती-पोते शास्त्री हो चुके हैं एवं 2 अध्ययनरत हैं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

(10) सांताक्रूज-मुम्बई निवासी डॉ. सुभाषजी चांदीवाल का दिनांक 19 दिसम्बर को देवलाली-नासिक में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हुआ। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

आचार्य कुन्दकुन्द के पदवी आरोहण दिवस पर –

संगोष्ठी सानन्द संपन्न

आचार्य कुन्दकुन्ददेव का आचार्य पदवी आरोहण दिवस वीर कुन्दकुन्द कहान जैन यूथ एसोसिएशन, नैरोबी और सर्वोदय अहिंसा, जयपुर द्वारा दिनांक 10 जनवरी को संयुक्त रूप से मनाया गया।

इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्ददेव के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को केंद्र में रखते हुए एक ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में श्री प्रकाशभाई शाह कोलकाता, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी के मध्य और अंत में पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित सुंदर भक्ति प्रस्तुत की गई। संगोष्ठी के प्रारम्भ में एक लघु फ़िल्म दिखाई गई, जिसमें नैरोबी, केन्या के नन्हे बच्चों ने आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन के संबंध में जानकारी दी।

संगोष्ठी का संचालन कोमल शाह नैरोबी और अंकुर शास्त्री भोपाल द्वारा किया गया। संगोष्ठी का ज़ूम एवं यूट्यूब के माध्यम से देश-विदेश के सैंकड़ों श्रोताओं ने लाभ लिया। इस दौरान पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित विनीतजी शास्त्री हटा का विशेष तकनीकी सहयोग प्राप्त हुआ।

हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक **श्री आशुजी शास्त्री झालरापाटन** का चयन राजस्थान राज्य अध्यापक भर्ती (रीट, संस्कृत विषय लेवल-2 शिक्षक) में हुआ है।

टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

आध्यात्मिक विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में नेहरू पुतला स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, एम्प्रेस सिटि स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर तथा श्री महावीर विद्या निकेतन के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में तीर्थधाम ज्ञानायतन द्वारा अर्हद्-वार्ता के अन्तर्गत आयोजित आध्यात्मिक विद्वत् संगोष्ठी दिनांक 6 जनवरी से 10 जनवरी, 2021 तक ऑनलाइन सम्पन्न हुई।

महोत्सव में देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त शताधिक विद्वानों ने जिनागम में वर्णित द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर आधारित विश्व-व्यवस्था, द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप आदि अनेक विषयों पर चर्चा की।

यह संगोष्ठी डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में संचालित हुई; उन्होंने इसी विषय पर अपने शोध-प्रबंध तथा अनेक ग्रंथों के आधार से अत्यंत मार्मिक विषयों पर चर्चा के लिए वक्ताओं को आमन्त्रित किया; साथ ही चर्चा को दिशा देने हेतु अनेक विद्वानों के साथ प्रश्नोत्तर करते हुए विषय को नए आयाम प्रदान किए।

तेरह सत्रों में विभाजित इस गोष्ठी में विविध विषयों पर दिन में तीन बार चर्चा हुई। इसके प्रत्येक सत्र में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य तथा समय-समय पर मंगल उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झाँझरी उज्जैन, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. अरुण शास्त्री जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित जे. पी. दोशी, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर आदि अनेक विद्वानों ने विशेषज्ञ के रूप में द्रव्य-गुण-पर्याय के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री अजित जैन बड़ौदा एवं मंत्री श्री अशोकजी जैन ने निर्माणाधीन संकुल (तीर्थधाम ज्ञानायतन) से विस्तृत परिचय कराया।

गोष्ठी में देश-विदेश के सैंकड़ों साधर्मियों ने उपस्थित होकर लाभ लिया। कार्यक्रम में संयमजी शास्त्री, अमनजी शास्त्री, समकितजी शास्त्री एवं प्रज्ञा जैन देवलाली का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। समस्त कार्यक्रम सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर प्रसारित किया गया, जिसमें संजयजी शास्त्री जयपुर एवं विनीतजी जैन का तकनीक सहयोग प्राप्त हुआ।

– अध्यक्ष, जयकुमार देवड़िया, तीर्थधाम ज्ञानायतन, नागपुर

मुक्त विद्यापीठ की सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के जनवरी सेमेस्टर के पेपर भेजे जा चुके हैं, यदि आपको प्राप्त नहीं हुए हों तो आप वाट्सअप या ईमेल से भी मंगा सकते हैं। वाट्सअप पर पेपर प्राप्त करने हेतु 9785645793 पर संपर्क करें या **shastriexams@gmail.com** पर ईमेल करके मंगा सकते हैं।

– नीशू शास्त्री (प्रबंधक)

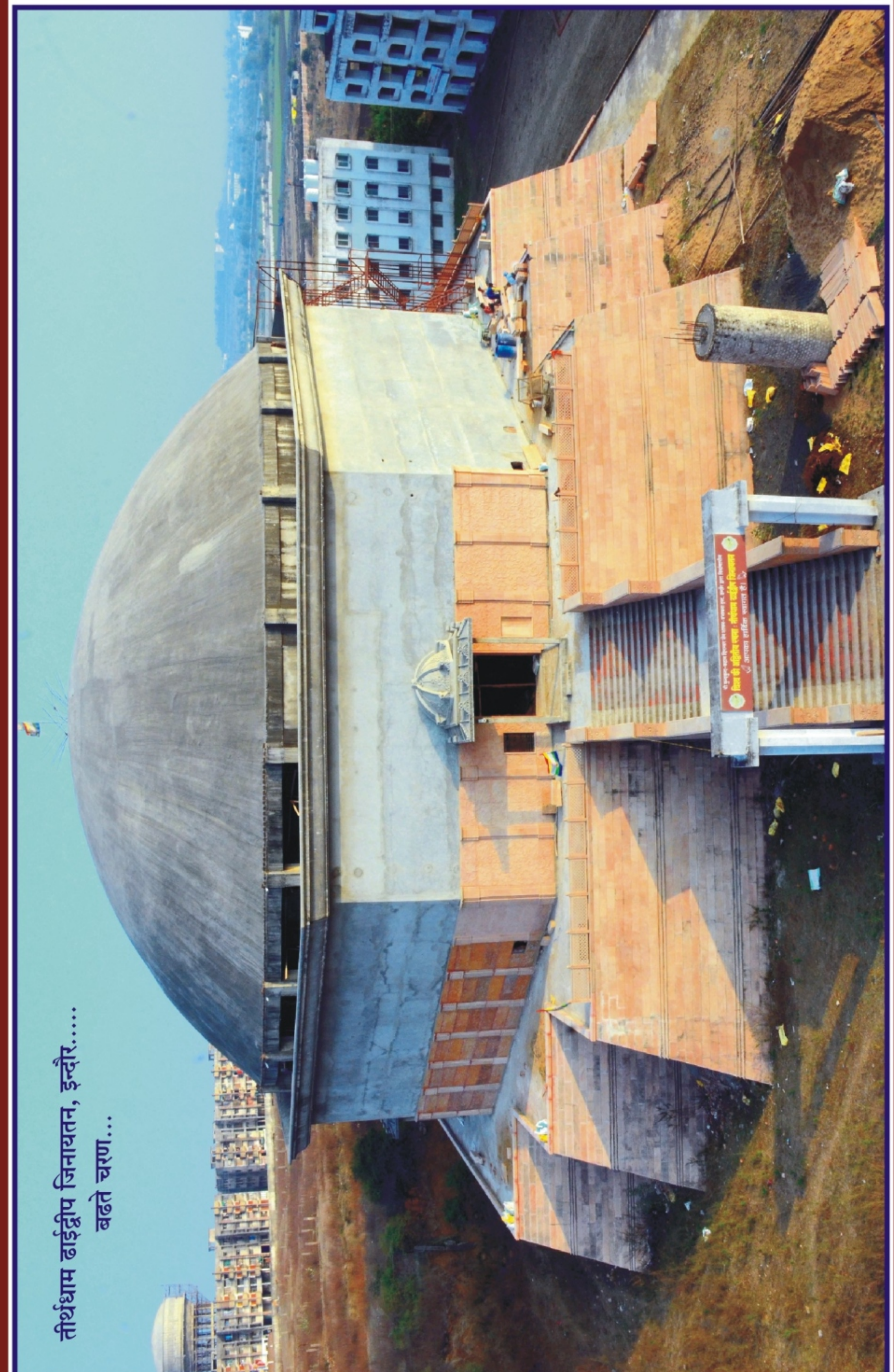

R.N.I. No. 38278/83 ***Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23***

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली 1143 प्रतिमाएँ

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 जनवरी 2021

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**